किताबे करबला का सरनामा 'मुस्लिम बिन अक़ील'

मौलाना रज़ीयुद्दीन हैदर साहब

संस्थापक यादगारे हुसैनी इन्टर कालेज इलाहाबाद

जनाबे मुस्लिम किताबे शहादत की वह भूमिका हैं जिन से इब्तेदाए करबला के नुक़ूश व ख़ुतूत बहुत साफ़ और रौशन हो गये है लेकिन एक सवाल क़ुदरती तौर पर ये पैदा होता है कि अहले बैत (अ0) में और बनी हाशिम और आले अबू तालिब (अ0) और अफ़राद मौजूद है मगर इस सफ़ारते अुज़्मा और नियाबते हक़ लिये इमाम की नज़रे इन्तिख़ाब आख़िर जनाब मुस्लिम की ही ज़ात पर क्यों ठहरी मसलहते इमाम की रूहानी हक़ीक़तों को जिन्हें मशीयते इलाही से ताबीर किया जाये हम माददी नुक्तः ए नज़र से कहॉ देख सकते है। मगर तारीख़ की बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ने से ये बात वाज़ेह हो जाती है कि जनाब मुस्लिम के वालिदे बुज़ुर्गवार जनाबे अक़ील एक वक़्त में मआशी कशमकश की ताब न लाकर सियासते उमवी का शिकार हो गये थे और आप हज़रत अमीर–उल–मोमिनीन अली इब्ने अली तालिब से बज़ाहिर जुदा हो कर मुआविया के दारुल खिलाफ़ः दमिश्क में पहुंच गये थे जहॉ उन्हें हाथों हाथ लिया गया ताकि अमीर–उल–मोमिनीन के हक़ीक़ी भाई का उनके पास होना फतहमन्दी के अलावा अमीरे शाम की हक़्क़ानियत से भी ताबीर किया जा सके आम हालात के मिअयार से अगर देखा जाये तो ये महज़ मआशी उलझनों से छुटकारा पाने की एक सूरत थी और बस अगर तारीख़ का ये मामूली नुक्तः भी ग़लत ताबीरात के लिये मुईन बन जाता है और कज फ़हम अफ़राद जनाबे अक़ील का अलवी जमाअत से अलहदिगी का ढिंढोरा पीटते हैं। हालॉ कि अक़ील हैं जिन्हों ने वाक़िअः–ए–तहकीम के बाद जबजहहाक अलवी मक़बूज़ात पर जक उठा कर राहे फरार इख़तियार करता है और उसी सिलसिले में कुछ कूफियों ने भी अमीर–उल–मोमिनीन का साथ न दिया तो इस मौके पर भी मक्के से हज़रत की नुसरत व इम्दाद के लिये एक खत में पेशकश की है उसके जवाब में मौला ने एक तवील खत में तहरीर फर्माया था जिसका एक फिक्रः यह था ''अपने गिर्द लोगों का मजमअ देख कर मेरी हिम्मत नहीं बढ़ती और न उनके छूट जाने से मुझमें घबराहट पैदा होती है।''

कसरते अहलो व अयाल की वजह से जनाबे अक़ील इस हद तक परेशान हाल थे की खुद अमीर–उल–मोमिनीन ने फर्माया था ''बख़ुदा मैंने अक़ील को देखा कि वो सख़्त फ़क्र व फ़ाके में मुबतिला थे वो तुम्हारे गेंहू में से एक पाव मुझ से मॉग रहे थे। और मैंने उनके बाल परेशॉं। बच्चों को भी देखा जो फ़क्र व फ़ाक़े की वजह से सौंला गये थे और मालूम होता था इन के चेहरे पर नील लगा दिया गया है। इन सब बातों के बावजूद जहॉं तारीख़ ने ये बात बतायी है कि हज़रत अक़ील मुआविया के पास चले गये वहॉं ये तसरीहात भी महफ़ूज़ कर लिये है कि अली के भाई ने दुश्मन के दरबार में भी पहुंच कर क्या कारनामा अन्जाम दिया हैं भरे दरबार में मुआविया ने फर्माइश की कि मिंबर पर जाओ और अपने भाई के बारे में वो सब कुछ कहो जो दूसरे बन्दगाने दिरहम व दीनार कहते है– आज जौहरे अक़ीली के नुमायॉं होने का दिन था। जुर्अत मन्दी की तारीख़ में इस वाकिअे का भी एक मुक़ाम रहेगा। आप मिंबर पर गये और फ़र्माया कि, अय्योहन नास, गवाह रहना कि मैंने बहुत कोशिश की मगर अली (अ0) ने मुझ को दीन पर तरजीह नहीं दी और ए लोगों गवाह रहना कि ये मुआविया है जिन्होंने मुझ को अपने दीन पर तरजीह दे दी है इस मुख़्तसर से जुम्ले की बलाग़त और जामअियत पर नज़र करो जिसने एक वक़्त में इज़हार–ए–हक़ भी कर दिया और दोनों शखसियतों की दीनी हैसियत भी वाज़ेह कर दी। और सरे दरबार सियासते मआविया का सारा तिलिस्म भी तोड़ कर रख दिया और फिर इस मूसवी हैबत के सामने किसी में मजाल–ए–लब कुशाई पैदा न हुई। क्या ये वाकिआत और फ़िक़्रात जो वक़्त का पर्दा चाक करके हम तक पहुंच रहे

हैं खुद जनाबे अक़ील के पेशे नज़र न रहे होंगे ओर क्या आवाज़ों की बाजग़श्त उन के कानों से न टकराई होगी और बाद में हुकूमत की शातिराना चालों ने वाकिआत में जो रंग आमेज़ियाँ की थीं उस से जनाबे मुस्लिम बे ख़बर रहे होगें ? मैं तो विज्दानी तौर पर महसूस करता हूँ कि उस मौक़े पर तमाम बनी हाशिम की मौजूदगी में नज़रे इमामत का इन्तिख़ाब मुस्लिम के लिये सिर्फ़ इसी वजह से था कि अक़ील का फर्ज़न्द इतने दिनों की उमवी सियासत के रहे सहे तारो पौद भी बिखेर के डाल दे और दुनिया को फिर एक मर्तबा ग़ैर जानिब दार होकर हक़ व इन्साफ़ से हालात का जायज़ा लेने का मौक़ा फ़राहम हो सके। ये पहलू भी नज़र अन्दाज़ होने के काबिल नहीं कि इमाम कूफ़े से मुक़ाम पर जो अब मुददत से शामी इक़्तिदार का गहवारा बन चुका था। जनाबे मुस्लिम को तन्हा भेज कर दुश्मनों को इस गुज़रे हुए वाकिअे की याद दिलाते है और गोया ये बताते हैं कि अगर तारीख़ अपने को दोहराती है तो उसे आज भी दोहराना चाहिये। देखो ये कोई और नहीं अक़ील का फर्ज़न्द है। ए कूफ़ियो, ए शामियों अगर तुम्हें अपनी हुकूमत के बरहक़ होने का गुमान है अगर अपनी असकरी ताक़त पर घमण्ड है तो इसे भी अपने दामे तज़वीर से फंसा लो लेकिन इसी एक वाकिअे से इमाम के कमाले इअतिमाद और जनाब मुस्लिम के मर्तबः—ए—ईक़ान व ईमान पर भी रौशनी पड़ती है। और यही वजह थी कि मुस्लिम को नियाबत की ऐसी अहम और अज़ीम ज़िम्मेदारी सौंप दी गयी। तबरी ने इमाम के ख़त की वो लफ़्ज़ें भी महफ़ूज़ की है जिनसे हमारे ख़याल की ताईद होती है। अच्छा तो मैं तुम्हारी जानिब अपने भाई और चचा के बेटे अपने महले इअतिमाद अज़ीज़े करीब को रवाना करता हूँ।'' इमाम ने इस एक जुमले में जनाब मुस्लिम की चार खुसूसियात बयान फर्माई है। भाई के बाद चचा के बेटे कहने का ग़ालिबन यही मतलब है कि पहचान लो कि ये अक़ील के फ़र्ज़न्द है महले एतेमाद के बाद अज़ीज़े करीब का इज़ाफ़ः एक ऐसी हक़ीक़त की तरफ़ तवज्जोह दिलाता है जिस से महज़ माददी कूवत का इज़हार न हो बलकि रूहानी और फ़िक्री मर्तबः—ए—कुर्ब व इख़लास का इहसास बेदार हो सके। जनाबे मुस्लिम इमाम के इन मासूम जज़बात और पाक ख़यालात के अमानत दार बन कर कूफ़े पहुँचें और मुख़्तार बिन अली अुबैदः के घर मेहमान हुऐ सफ़ीरे हुसैनी का ये अमल खुद इस अम्र का तर्जुमान है कि जो हुकूमते वक़्त के खिलाफ़ महाज़ कायम करने या किसी नई सलतनत के लिये ज़मीन हम वार करने नहीं आये थे। बलकि एक नुमाइन्दः—ए—हक़ की है सियत से तालबाने हिदायत के इसरार पर उन को इस रूहानी मरकज़े इत्तिहाद व अमल पर मुज्तमा करना चाहते थे जहाँ से इसलाहे इख़लाक़ व सफ़ाए क़ल्ब और इरतिक़ा—ए—रूह का सामान फराहम किया जा सके जो दावते इस्लामी के अज़ीम—उश—शान रुक्न की हैसियत रखते हैं। आप ने वो तहरीर जो इमाम की जानिब से बतौर पयाम थी मज्मेअ को पढ़ कर सुना दी। दोस्तों के दिल तड़प उठे और उन्होंने व फूरे जज़्बात में इन्तिहाई अक़ीदत व मोवददत से लबरेज़ तक़रीरें की और वफ़ादारी का यकीन दिलाया। आबिस बिन शबीब शाकिरी हबीब इब्ने मज़ाहिर, सईद बिन अब्दुल्लाह हनफ़ी और दूसरे साहिबाने ईमान ने इमाम हुसैन के इस्तिक़बाल में अपने दिली जज़बात व इहसासात का इज़्हार किया। ये ख़बर बिजली की तरह हर तरफ़ दौड़ गयी। और चन्द ही रोज़ में अठ्ठारह हज़ार कूफियों ने इमाम की कियादते रूहानी तस्लीम करते हुऐ नायबे इमाम के हाथ पर हज़रत के लिये बयअत कर ली। हालात की बेहतरी और अहले कूफ़ः की बेक़रारी का ये आलम देख कर मुस्लिम मुतमइन हुऐ और इमाम को तशरीफ़ आवरी के लिये एक अरीज़ा तहरीर कर दिया। जिसे पढ़ने के बाद ही इमाम ने कूफ़े की तरफ़ रवानगी का इरादा फर्मा लिया। इस लिये कि ज़ाहिरी हालात और आप के अमल दोनों ने इतमामे हुज्जत की वो तमाम मन्ज़िलें तय करा दी जो एक ग़ैर जानिबदार इनसान की नज़र में काबिले कुबूल हो सकें। आज की अिल्म कुश और तहज़ीब सोज़ दुनिया हुसैनी इक़्दामात के बारे में जो चाहे कहे मगर ऐसी मुन्सिफ मिज़ाज हस्तियॉ भी गुज़री है जिन्होंने इस बेमिसाल अज़ीमत, दअवत और तजदीदे मिल्लत के मर्तबः—ए—मख़सूस का इन्तिहाई इहतिराम के साथ इअतिराफ़ किया है मौलाना अबुल कलाम आज़ाद मरहूम जिनकी अिल्मी शख़सियत को दुनियां अभी न भूली होगी

अपनी एक तसनीफ़ तज़किरा में सफ़हः 134 पर तहरीर फर्माते हैं। अहदे अवायले बनू उम्मया में कि अभी हिजरत की पहली सदी भी खत्म नहीं हुई थी कितनी बड़ी जमाअत अजिल्लः–ए–सहाब–ए–केरामः और अरकाने बैते नबूवत व बाक़िय–ए–साले खैर–उल–करून की मौजूद थी ? और कौन है जो इन की अज़मत व शरफ़ में एक लम्हे के लिये भी शक कर सके ? लेकिन बिदआत व मोहद्दिसाते बनू उम्मया के मुकाबले में सरफरोशने इक़दामे अज़ीमतो फ़तहे बाबे मक़ावमत व सिबात फ़िल हक़ वल अदल का जो एक मख़सूस मकाम था वो तो बजुज़ हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के और किसी के हिस्से में न आया'' अहले कूफ़ा के इस ज़ेहनी इनक़िलाब की ख़बरें बराबर दारुल ख़िलाफ़ः भी पहुँच रही होगी और इसी लिये यज़ीद ने सूरते हाल पर काबू पाने के लिए उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद ऐसे सफ़्फ़ाक व ब–रेहम हाकिम को कूफ़े की गर्वनरी पर मामूर कर के बसरे से यहां मुन्तक़िल होने का हुक्म दिया। कूफ़ाः पहुंचते ही इब्नज़ियाद की सख़्त गीरियों और दहशत सामानियो ने नये रूजहानात की नापायदार तब्दीलियों को एक दम रोक दिया। वो क़ल्ब व दमाग़ जो अर्से से इस्तिब्दादी शिकन्जों में कसे हुऐ रह चुके थे आमरियतव अस्करीयत के दबाव से फिर मफ़लूज़ होना शुरूअ हो गये। और आज़ादि–ए–ज़मीर और हुर्रिय्यते फ़िक्र की जो हलकी सी किरन फूट रही थी शामी तशददुद के घटा टोप अंधेरे में फिर ग़ायब हो गयी हालात बिल्कुल बरअकस हो कर सामने आने लगे। जनाबे मुस्लिम ने अपने को ख़तरात में घिरा हुवा पाया और मुख़्तार का घर हिफ़ाज़त के लिये जो ना काफ़ी मालूम हुआ तो मख़फ़ी तौर पर हानी बिन अुरवा के घर मुन्तकिल हो गये जो अशराफ़े कूफ़ा में से थें और क़बीले ए मुराद व मुज़्हज के सरदार भी थे। हुकूमत की रीशः दवानियो ने आख़िर जनाबे मुस्लिम का पता चला ही लिया और इब्ने ज़ियाद के गुलाम माक़िल ने हानी के मकान की निशान दही कर दी। जनाबे हानी अिताबे शाही का शिकार होकर कैद में डाल दिये गये। और वी इस तरह अब क़ुर्बानि–ए–अहल–ए–बैत के नुक्तः–ए–आग़ाज़ की नौबत आ गयी।

वफ़ादार मेहमान नवाज़, मुस्तक़िल मेज़ाज और साहबे ईमान व अमल हानी के हालात सुन कर ग़ैरते हाशिमी और शुजाअते मुत्तलबी जोश में आगयी और जनाबे मुस्लिम जनाबे हानी(अ0) की रेहाई के लिए बरवक़्त अक़्दाम पर आमादा हो गये। आप चार हज़ार अहले कूफ़ा को ले कर जो उस वक़्त तक आप के साथ थे क़सरे शाही तक पहँच गये। इब्ने ज़ियाद क़िला बन्द हो गया मगर अयारी और ग़लत बयानी से उस ने मुस्लिम के साथियों को इस दरजा ख़ौफज़दा किया कि वह आप का साथ छोड़ ने पर मजबूर हो गये। तारिख़ ने इन चालों को बे नक़ाब कर दिया है मगर मैं ब ख़्याले तवालत यहाँ इस का तज़केरा ग़ैर ज़रूरी समझता हूं। अब शाम हो चुकी थी। हमराहियों में सिर्फ तीन आदमी रह गये थे जो मग़रिब के बाद ही साथ छोड़ कर जा चुके थे। सफ़ीरे हुकूमते रब्बानी हुसैन (अ0) का नोमाईन्दा और कूफ़ियों का मेहमान तनहा बाज़ारों में फिर रहा था कि एक औरत तौआ नामी के घर में रात भर पनाह लेने का मौक़ा मिल गया मगर उस के लड़के ने मुख़्बरी कर दी और इब्ने ज़ियाद को इत्तिला हो गयी। सुबह होते ही एक तने तनहा मुस्लिम (अ0) पर फ़ौजों की यलग़ार हो गई। हरावले फ़ौजे हुसैनी अपनी अदीमुल मिसाल शुजाअत के साथ जंग करते करते बेहद ज़ख़्मी हो गया। मगर शेरे बीशये रेसालत रोबाह सिफत दुश्मनो के टिड्डी दिल फौज के काबू में न आ सका।

Every thing is fair in Love and War

मोहब्बत और जंग में हर चीज़ जायज़ है पर अक़ीदा रखने वालो ने बे वतन मुस्लिम को एक खस पोश गढ्ढे में गिरा कर गिरफ़्तार किया और इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया। दुनिया को आवाज़ दो आये और अक़ील के फ़रज़न्द मुस्लिम की आन बान देखे। हाकिमे वक़्त का दरबार, इक़्तेदार हुकूमत का मोकम्मल मुज़ाहेरा फ़ौजी हेरासत का रोबो दाब, मुस्तक़बिल के हालात कि नुमायाँ अक्कासी अपने हर बुने मूसे ख़ून जारी जिस पर नज़र पड़ती है वह खून का पियासा मगर अल्लाह अल्लाह! ये जुर्अत ये बेबाकी कि। इब्ने ज़ियाद बग़ावत का इल्ज़ाम लगाते हुये पूछता है कि ''तुम यहां क्यों आये थे। बाहमी तफ़रके डालने और फसाद कराने के लिए ताकि ख़ाना जंगी का बाज़ार गरम हो?'' जनाबे मुस्लिम ने फ़रमायाः

''नहीं में इस लिए तो नहीं आया था बल्कि इस मुल्क के लोग ये ख़ेयाल करते हैं कि तेरे बाप ने यहाँ के अच्छे लोगों को क़त्ल किया और नाहक इनके ख़ून बाहाए और वह अफ़आल व आमाल राएज किये जो सलातीने जब्बारो कहहार करते हैं। हम सिर्फ़ इस लिये आये कि अदलो व इन्साफ़ और तालिमाते कुरआन के मुताबिक लोगों को चलायें–''

इस जुरअत मन्दाना जवाब में अपनी तरफ़ से सफ़ाई ओहदा–ए–सफ़ारत की तक़मील और अक़दामे हुसैनी पर मोकम्मल तबसेरा सब कुछ मौजूद है इस के एक एक लफ़्ज़ पर ग़ैार करो ये उस वक़्त के यज़ीद व इब्ने ज़ियाद को जवाब था और वही जवाब आज के यज़ीद व इब्ने ज़ियाद की दरिदा देहनी के लिये भी काफ़ी है। जब ज़ालिम लाजवाब हो जाता है और जुल्म बे बस तो फिर आख़री हरबा इस्तेमाल करने पर उतर आता है यानी हक़ व इन्साफ़ के गले पर छूरी फेरदी जाती है हक़ीकत में येह उसकी फ़त्हनही बल्कि शिकस्त होती है और इस नुक्ते से मज़लूम की हक्क़ानियत का आफ़ताब आलमताब तलूअ हुआ करता है। जिस की रोशनी तारीक दिलों को भी पुर नूर करने लग़ती है।

हक़ के इस नक़ीब ने हक़ीक़ते हाल पेश करके इब्ने ज़ियाद के लगाये हुये इल्ज़ामात को पाश पाश कर दिया इब्ने ज़ियाद को मुस्लिम की इस बेबाकी पर झुँझलाहट आगयी। और उसने हुक्म दिया कि इन्हें दारुल अमारा के छत पर ले जा कर क़त्ल करो और जिस्म को नीचे फेंक दो, ये परवान–ए–मौत शहीदे राहे हक़ के लिये जन्नत का परवाना हो गया जनाबे मुस्लिम तकबीर व तसबीह करते हुए नेहायत तमकनत व वकार के साथ कोठे की तरफ बढ़े और कहते जाते थे कि बारे इलाहा हमारे और इस कौम के दरमायन फैसला व मोहाकमा फ़रमाया जिस ने हम पर जुल्म तोड़ दिया और हमें ज़लील व रुसवा किया। बकीर बिन हमरान अहमरी ने मुस्लिम (अ0) को शहीद किया और लाश सड़क पर गिरादी। ये उस जुल्म की मुख़्तसर रूदाद थी जो सफ़ीरे हुसैनी पर किया गया। उन की शहादत ने वक़्ती तौर पर कूफ़े की फज़ा बदल दी और ये भी सही है कि इस के बाद ही मन्ज़िल करबो बला क़रीब तर होगयी मगर इस वाक़ये दुनियाए इन्सानियत व शराफ़त आज तक आवाज़े एहतेजाज बुलन्द कर रही है। इस्लामी तारीख़ के वह मौवाके भी हमारे सामने हैं जब ओहद फ़ारूकी में इस्लाम के सोफ़रा नो शीरवानी मक़बूज़ात में ब–मकाम मदाएन पहुँचे और बकौल अल्लामा शिबली बेबा की व दीलेरी इनके चेहरो से टपकती थी। यज़ीद गर्द के दरबार में कुछ इस अन्दाज़ की गुफतगू हुई कि वह गुस्सा से बेताब हो गया और कुछ कहा कि

''अगर कासिदों का कत्ल जाएज़ होता तो तुम में से कोई ज़िन्दा बच कर न जाता।''

एक दूसरे मौके पर जब इस्लामी सफ़ीर खालिद रूमियों के लशकर गाह में पहुँचे तो बक़ौल अल्लामा शिबलीः

''सिपहे सालार (बाहान) ने नेहायत एहतेराम के साथ इस्तेकबाल किया और अपने बराबर बेठाया।''

इस तरह एक और मौके, पर जब अजमीओं की ख़्वाहिश पर मुग़ीरा बिन शोअबा ब हैसियत सफ़ीर दरबार में पहुंचे तो मरवाने शाह और इनके दरमेयान दुरुशत लहजे में बहुत सख़्त गुफतगू हो गयी। हत्ता कि मरदान शाह ने कहाः

''ये क़दर अन्दाज़ जो मेरे तख़्त के इर्द गिर्द खड़े हैं अभी तुम्हारा फ़ैसला कर देते लेकिन मुझ को ये गवारा नहीं कि इन के तीर तुमहारे ना पाक ख़ून में आलूदा हों अब भी तुम अगर यहां से चले जाओ तो मैं तुम को मोआफ़ कर दूंगा।''

इस जुमले से ज़ाहिर है कि दुश्मन इन्सानी तक़ाज़ों के शिकन्जे में अपने को बेबस पाकर इज़्हार ग़म व गुस्सा पर इक्तेफ़ा कर रहा है वह बुलाए हुए कासिद का ख़ून करना खेलाफ़े इन्सानियत व दयानत समझता है। देखो इन वाक़ेआत से अन्दाज़ा हो गया कि यह इन्सानी तास्सुरात और एखलाकी तसव्वरात एक ऐसी जमाअत के ज़ाहिर हुये जो अभी इस्लाम के रूहानी नेज़ाम से वाबस्ता नहीं हुई है, बल्कि इस्लाम की ज़र्री ताअलीमात से यकसरना आशना है। अब अहले इस्लाम बल्कि पूरी दुनियाए इन्सानियत के लिये ये मोक़ा एक लमह–ए–फिकरिया पैदा करता है। कि दावते इस्लामी के कबल मुनक़रीने हक़ से जिन इन्सानी ख़सायेस का ज़हूर हुआ था आखिर वह बातें पैग़ामे रब्बानी और ताअलीमे रूहानी के बाद हलका

(बक़िया पेज नं0 18 पर,.....................)

(अ0) ख़ैमे में आये। मशक उठाई ख़ैमे से चले थे कि सकीना ने दामन पकड़ा ऐ चचा जो गया वो फ़िर पलटा नहीं। ऐ चचा कहां छोड़ कर चले? अब्बास (अ0) सर झुकाये खड़े हैं सकीना (अ0) दामन पकड़े हुऐ हैं। आपने सुना होगा ज़ाकेरीन से कि जब सकीना (अ0) ने दामन पकड़ा था तो अब्बास (अ0) ने अपनी तलवार दे दी थी ऐ बेटी मैं लड़ने नहीं जा रहा हूँ। मैं तुम्हारे लिये पानी लेने जा रहा हूँ। हां–हां मैंने मक़ातिल में लफ़्ज़ें नहीं देखीं लेकिन इतना ज़रूर देखा है कि अब्बास जब निकले तो हाथ में तलवार न थी ख़ाली नैज़ा था। मालूम होता है तलवार सकीना के सिर्पुद कर आये थे। निकले मैदान में आये। दरिया का रूख़ किया। चार पाँच हज़ार सिपाही रास्ता रोके हुऐ। मगर अली के शेर को भी कोई रोक सकता है? हमला किया हमले के बाद हमला लशकर भागा अब्बास (अ0) दरिया तक पहुँचे। दरिया में घोड़ा डाला प्यासे बच्चों ने तीन दिन के बाद लहरें लेता हुआा दरियाा देखा। दरया में अब्बास (अ0) के घोड़े को देखा दरिया में डाली हुई ख़ाली मशक को देखा। अब जब कोई बच्चा कहता था हाये प्यास तो सकीना (अ0) कहती थीं अब क्यों रो रहे हो? अब मेरा चचा पानी ला रहा है। मेरा चचा पानी ला रहा है। मशक में पानी भर गया है बस अब पानी आता होगा। अब्बास (अ0) निकले घोड़े को निकाला ख़ैमों का रूख किया भागी हुई फ़ौजे पलटी। फ़िर रास्ता रोका। अब्बास (अ0) जंग भी करते जा रहे हैं। मशक को बचाते भी जा रहे हैं। आज आपको अब्बास (अ0) का मातम करना है इसलिये मैं ख़त्म अभी नहीं कर रहा हूँ इसलिये कि अलमदार का मातम है। अरे उस मां के बच्चे का मातम है। जो अपने बच्चे पर रोई नहीं जो हुसैन (अ0) का मातम कर रही थी एक मर्तबा तलवार पड़ी अब्बास का दाहेना हाथ कटा। आगे बढ़े तो बांयां हाथ कटा। मेरी समझ में नहीं आया कि अली (अ0) से जिस ने जंग सीखी हो वो जंग में इतना ग़फ़िल कैसे हो गया कि इुशमन को मौक़ा मिल गया धोखा देकर वार करके हाथ काटने का। मगर मेरा दिल कहता है कि जब अब्बास (अ0) चले तो हाथों पर कोई ज़ख़्म आ गया। उस वक़्त चले थे तो एक इरादा था कि फ़ौजों को भगा के दरिया तक पहुँच जायें फ़ौजों को भगा भी दिया। दरिया पर क़ब्ज़ा भी कर लिया। मगर अब अब्बास (अ0) की नीयत अब्बास (अ0) की तवज्जो पूरी मशक की तरफ़ है। जब तवज्जो हट जाती है मौक़ा मिल जाता है दुशमन को। अब अब्बास (अ0) अपनी फिक्र में नहीं अब तो मशक की फ़िक्र में हैं। दुशमन को मौक़ा मिला। हाथ कटा दूसरा वार किया। दूसरा हाथ कटा। अब्बास (अ0) ने मशक को दांतों से दबाया। घोड़े को ऐड़ पर ऐड़। अरे किसी तरह प्यासों तक पानी पहोंच जाये। हमीद कहता है कि थोड़ी दूर पहोंचे थे घोड़े के ऊपर बलन्द होते थे ख़ैमों को देखते थे कि प्यासे बच्चे कितनी दूर रह गये। अब सकीना (अ0) तक पानी पहोंचने में कितना फ़ास्ला रह गया कि एक मरतबा एक तीर आकर मशक पर पड़ा। मशक छिदा पानी बहा। शकी ने गुर्ज़ मारा सर ज़ख़्मी हुआ और आवाज़ दी ऐ भय्या! अब्बास कि मदद किजिये। हुसैन चले ये कहते हुऐ अलान इन कसर ज़हरी अब्बास तुम्हारे मरने से कमर टूट गयी।

  

(बक़िया पेज नं0 22 का,............)

बगोशाने इस्लाम के अन्दर क्यों मफकूद हो गई।? हर शख़्स को इख़्तयार है कि वह हालात पर तनकीदी निगाह डाले और तवारीख़ इस्लाम से इस सवाल के जवाब का मुतालेबा करे लेकिन मुझे सिर्फ यही कहना है कि किताब शहादत की तदवीन एख़्लाक इस्लामी के इन्हीं भूले हुये अस्बाब को याद दिलाने के लिये की गई। जिस का इफ़्तेताहिया कूफ़े में मुस्लिम (अ0) बिन अक़ील थे और ततिम्मा क़रबला में हुसैन इब्ने अली (अ0)।